thearyasamaj.org

ओ३म्

ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 89 अंक : 15
ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा
विक्रम संवत् 2072
कलि संवत् 5116
05 मई से 21 मई, 2015
दयानन्दाब्द : 191
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,116
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुनदेव चड्डा , कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजापार्क, जयपुर ।
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 व 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,
42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास ,
जयपुर ।
मोबाईल – 9314032161
मुद्रक :
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स , जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamartand

प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की 158वीं वर्षगांठ पर समस्त क्रान्तिकारियों को

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का शत–शत नमन।

रानी लक्ष्मी बाई

नाना कडनवीस

मंगल पाण्डे

तांत्या टोपे

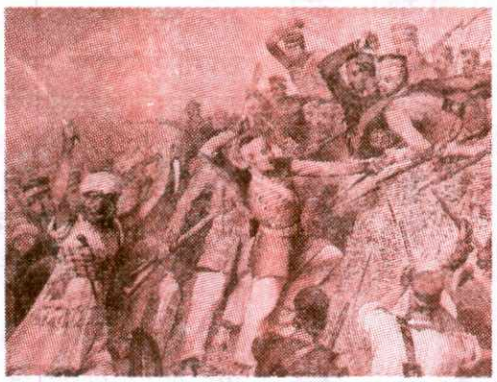

जो राजा दण्डनीयों को न दण्ड और अदण्डनीयों को दण्ड देता है अर्थात् दण्ड देने योग्य को छोड़ देता और निर्दोष को दण्ड देता है वह जीता हुआ बड़ी निन्दा को और मरे पीछे बड़े दुःख को प्राप्त होता है। – छठा समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

वेदामृत "ब्रह्मचर्याश्रमविषयः"

ओ३म् ब्रह्मचार्ये ति समिधा समिद्धः कार्ष्णं वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रुः ।
स सद्य एति पूर्वस्मादुत्तरं समुद्रं लोकान्त्संगृभ्य मुहुरारिक्रत् ।। ४।।

ब्रह्मचारी जनयन्ब्रह्मापो लोकं प्रजापतिं परमेष्ठिनं विराजम् ।
गर्भो भूत्वाऽमृतस्य योनाविन्द्रो ह भूत्वाऽसुरांस्ततर्ह।। ५ ।।

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति ।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छति ।। ६।।

–अथर्व० कां० ११ । अनु० ३ । मं० ६,७,१७ ।।

(ब्रह्मचार्येति) जो ब्रह्मचारी होता है, वही ज्ञान से प्रकाशित तप और बड़े बड़े केश श्मश्रुओं से युक्त दीक्षा को प्राप्त होके विद्या को प्राप्त होता है। तथा जो कि शीघ्र ही विद्या को ग्रहण करके पूर्व समुद्र जो ब्रह्मचर्याश्रम का अनुष्ठान है, उसके पार उतर के उत्तर समुद्रस्वरूप गृहाश्रम को प्राप्त होता है और अच्छी प्रकार विद्या का संग्रह करके विचारपूर्वक अपने उपदेश का सौभाग्य बढ़ाता है।।4।।

(ब्रह्मचारी ज0) वह ब्रह्मचारी वेदविद्या को यथार्थ जान के प्राणविद्या, लोकविद्या तथा प्रजापति परमेश्वर जो कि सबसे बड़ा और सबका प्रकाशक है, उसका जानना, इन विद्याओं में गर्भरूप और इन्द्र अर्थात ऐश्वयर्ययुक्त हो के असुर अर्थात् मूर्खों की अविद्या का छेदन कर देता है ।।5।।

(ब्रह्मचर्येण क0) पूर्ण ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़के और सत्यधर्म के अनुष्ठान से राजा राज्य करने को और आचार्य विद्या पढ़ाने को समर्थ होता है। आचार्य उसको कहते हैं कि जो असत्याचार को छुड़ा के सत्याचार का और अनर्थों को छुड़ा के अर्थों का ग्रहण कराके ज्ञान को बढ़ा देता है।।6 ।।

– "वर्णाश्रमविषयः संक्षेपतः ,
ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

सम्पादकीय | 1857 का स्वाधीनता संग्राम और दयानन्द सरस्वती

भारतीय इतिहास के अवलोकन से ज्ञात होता है कि जब 1857 की क्रान्ति का विद्रोह शान्त हो गया और भारत का शासन ईस्ट–इण्डिया कम्पनी से छिनकर सीधे ब्रिटिश साम्राज्ञी के अधीन कर दिया गया, उस समय तत्कालीन महारानी विक्टोरिया ने अपनी भारतीय प्रजा को जो आश्वासन दिए थे, उनमें सर्वोपरि अश्वासन ये था कि आगे से ब्रिटिश हुकुमत अपनी भारतीय प्रजा के धार्मिक कार्यों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेगी। इसी सन्दर्भ में ये भी स्पष्ट किया गया कि शासन की दृष्टि में गौरे और काले का कोई भेद नहीं किया जायेगा तथा महारानी अपनी भारतीय प्रजा को मातृतुल्य स्नेह करेगी।

दयानन्द विदेशी शासन के इन्हीं आश्वासनों को गिनाते हुए ये कहना चाहते हैं कि इन आश्वासनों को यदि सत्य भी मान लिया जाये तो भी महारानी विक्टोरिया प्रदत्त यह सुराज्य हमारे लिए स्वराज्य की तुलना में कभी काम्य नहीं हो सकता ।

सुराज्य की तुलना में स्वराज्य कहीं अधिक वरणीय तथा श्रेष्ठ है। इस तथ्य की घोषणा करते हुए उन्होंने अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि "कोई कितना ही करे, किन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। "अथवा मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, पुत्र पर माता–पिता के समान कृपा, न्याय, दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। महर्षि दयानन्द की इन वाक्यों में निहित भावना ने क्रान्तिकारियों के हृदय में राष्ट्रवाद की अग्नि को प्रदीप्त कर दिया।

1857 की क्रान्ति से महर्षि दयानन्द के जीवन की अनेक घटनाऐं जुडी हुई है– 1855 में कनखल में विरजानन्द के गुरूदेव स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती की सेवा में विद्या प्राप्ति के निमित्त महर्षि दयानन्द उपस्थित होते हैं। तब पूर्णानन्द जी उन्हें कहते हैं कि "मैं बहुत वृद्ध हो चुका हूँ, आप मथुरा जाइये, वहां हमारे योग्य शिष्य विरजानन्द रहते हैं। वे आपकी मनोकामना पूर्ण करेंगे।"

व्यग्र दयानन्द कनखल से सीधे मथुरा नहीं जाते हैं। वे उत्तराखण्ड की ओर चलकर कानपुर तथा नर्मदा के क्षेत्र पहुँचते है। यह वह क्षेत्र जहां स्वतन्त्रता संग्राम की योजना मूर्त्त हो रही थी। इन प्रसंगों से यह स्वतः सिद्ध है कि दयानन्द ने घूम–घूम कर क्रान्ति की अलख जगाई थी।

महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रभावित होकर देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय लिखते हैं कि "गौत्तम बुद्ध ने निर्वाण का मार्ग खोजकर लाखों लोगों को उस पथ का पथिक तो बनाया किन्तु उन्होंने विच्छिन्न भारत को एकता के सूत्र बांधने की बात एक बार भी नहीं कही। विमल प्रतिभा के धनी नम्बुदरी ब्राह्मण कुलोत्पन्न शंकर ने वेदान्त सूत्रों पर अपना अनुपम भाष्य लिखकर स्वयं के लिए अविनश्वर कीर्ति अर्जित की, परन्तु क्या उन्होंने विभक्त भारत को एक करने के लिए कोई कार्यक्रम

राजा और राजसभा के सभासद् तब हो सकते हैं कि जब वे चारों वेदों की कर्मोपासना ज्ञान विद्याओं के जाननेवालों से तीनों विद्या सनातन दण्डनीति न्यायविद्या, आत्मविद्या अर्थात् परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव रूप को यथावत् जानने रूप ब्रह्मविद्या और लोक से वार्ताओं का आरम्भ सीखकर सभासद् वा सभापति हो सकें ।

– छठा समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

प्रथम मंत्र में इस पृथ्वी के साथ अपना सनातन सम्बन्ध पूर्व पूर्व पुरखों के माध्यम से हमने बताया है तथा इसी पर देवासुर संग्राम भी बताया है, जिससे स्पष्ट है कि हम मानव, देव और असुर सदा से इस पृथ्वी पर साथ साथ रहने वाले हैं।

दूसरे मंत्र से स्पष्ट ज्ञान होता है कि अश्विनी कुमार, विष्णु और इन्द्र को यह भूमि प्रिय है, एक तटस्थ व्यक्ति की भाँति वे इसे केवल युद्धस्थली ही नहीं मानते हैं। इन्हें प्रिय लगने वाली यह दिव्य भूमि जो हमारी माता है, हमें जीवन प्रदान करे, यह प्रार्थना है।

इस तृतीय मंत्र में बताया गया है कि इस पर रहने वाले मानवों के विभिन्न प्रवृत्ति निमित्त से गणना द्वारा मोटे मोटे पाँच वर्ग बताये गये हैं। मनु तत्व की प्रधानता से देव असुर आदि के साथ हम मनुष्यों के मिलाने से हम मानव हैं। इसके साथ ही मातृनामों के आधार पर हम दितिज – दैत्य, दनुज – दानव, मनुज–मानव आदि नामों से व्यवहार भेद से भिन्न–भिन्न हैं। जन्म सभी का इस पृथ्वी पर है, अतः सभी मरणधर्म हैं और द्विपद अथवा चतुष्पद सभी की गति यह भूमि ही है, इन सभी भूमि पुत्रों के जीवन का स्त्रोत यह सूर्य है जो अपनी किरणों से अमृतज्योति प्रदान करता है। इससे यह भी प्रतीत होता है कि द्युलोक का सूर्य भूलोक के सूर्य आदि देवों को ऐसा ही प्राणदाता है जैसा अन्य सभी प्राणियों का ।

चतुर्थ मंत्र बताता है कि यहाँ पृथ्वी के पुर देवों से निर्मित हैं, यहाँ के खेत भी उनके द्वारा निर्मित हैं। प्रजापति इस पृथ्वी का विधाता तथा पालक हैं।

पाँचवे मंत्र में पृथ्वी के निवासियों के पारस्परिक सम्बन्धों के लिए जन समुदायों के उपयोग के नाना मार्ग हैं जो पगदण्डी से प्रारम्भ होकर विभिन्न राजमार्गों के रूपों में हैं। इसी भाँति रथ आदि वाहनों के भी विविध मार्ग है। इन्हें सभी उपयोग में लेते हैं भले ही वे लोग भलें हों, बुरे हों, इस मातृभूमि का अनुग्रह मिले कि सभी मार्गों पर हमारे अधिकार हों जिससे यहाँ तस्कर और शत्रु हमें आतंकित न करें।

मार्गों के इस प्रसंग में यह बता देना उचित है कि ये मार्ग देवलोक को जाने वाले भी हैं जिनसे बड़े–बड़े व्यापारियों के सम्बन्ध स्वर्ग से थे।

अथर्ववेद के तृतीय काण्ड का पन्द्रहवाँ सूक्त व्यापार के विषय में है, वह व्यापार भी देवलोक से हैं। इस सूक्त में आठ मन्त्र हैं । कुछ मन्त्र द्रष्टव्य हैं : –

1. ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावा पृथिवी संचरणि ते मा जुवन्तां पयसाघृतेन यथ क्रीत्वा धन माहराणि।।2।।

द्युलोक (देवलोक, स्वर्ग) और पृथ्वी के बीच देवलोक को जाने वाले अनेक संचार पथ हैं, वे सभी मुझे दूध की घी जैसे उत्तम आहारों से सुख और तृप्ति प्रदान करें जिससे मैं खरीद कर विक्रेय धन ला सकूँ ।

2. इमामग्ने शरणिं मीमृषो ना यमध्वानमगाम दूरम्।
शुनं नो अस्तु प्रपणो विक्रयश्च प्रतिपणः कलिनं मा कृणोतु ।।4।।

हे अग्ने ! हम दूर दूर तक जिस मार्ग पर चले हैं, इससे उस उस मार्ग की हमारे द्वारा हुई क्षति को क्षमा करें। आपका अपध्यान न होने से हमारा प्रपण (सौदा), विक्रय (बिकरी) तथा प्रतिपण (खरीदे धन के विक्रय का लाभ) वृद्धि कर हो जो मुझे वस्तुतः फलदाई बनें।

3. येनधनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः।
तन्मे भूयो भवतु मा कनीयोऽग्ने सातघ्नो देवान्हविषा निषेध ।।5।।

हे देवों ! जिस पूंजी को मैं व्यापार में लगा रहा हूँ उस धन से धन की चाह करता हुआ । मेरा वह धन बढ़े, उसमें छीजत न हो। अग्ने! मेरी दी गई हवि से सन्तुष्ट आप मेरे लाभ में मेरे इस सुख में विघ्न करने वाले देवों अर्थात् शैतानों को दूर राखिये।

4. येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।
तस्मिन् म इन्द्रो रूचिमादधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः।

देवों! अपने धन को देकर उससे क्रय धन द्वारा धन लाभ चाहते हुए मैं जिस धन को व्यापार में लगा रहा हूँ उसमें इन्द्र रूचि ले साथ ही प्रजापति, सविता, सोम और अग्नि भी रूचि लें।

देवलोक के शासन तन्त्र से जुड़े वाणिज्यिक अधिकारियों से यह प्रार्थना है। यहाँ हवि की अर्थ है उस तन्त्र से सम्बन्ध आनुशासनिक प्रक्रियाओं की यथोचितपूर्ति । देव का यहाँ शैतान अर्थ है, दिवुअर्दने (क्षीरस्वामी) धातु है, जो 'देवयति' – पीड़ा देता है, हिंसा करता है' वह है देव. यहाँ सातघ्न विशेषण इस अर्थ को बताता है। इससे यह स्पष्ट है कि देव, असुर, दैत्य, दानव, राक्षस, गन्धर्व, अप्सरा, विद्याधर, सर्प, नाग, हरि आदि इस पृथ्वी से ही सम्बन्ध हैं। इसके बाहर इनका कोई स्थान नहीं है।

पुराण इतिहास में जो कुछ ऐसा विवरण है वह सर्वथा सत्य है, उसमें कहीं भी अर्थवाद, कल्पना अथवा मिथ्या नहीं है। इस तथ्य की जानकारी के अभाव से अब तक हम वेद से लेकर महाभारत काल तक के तथा तदनुकूल विचारों को ही साहित्यिक वर्णन का विषय बनाकर जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, उसकी यथार्थ व्याख्या नहीं हुई है। इतना ही नहीं इसे मिथक कहकर काल्पनिक निराधार समाधानों का ढेर लगाया जा रहा है। वास्तविकता यह है कि इस विचारसरणि को लेकर अपने आर्ष वाड्.मय को यथार्थ व्याख्या दें।

– क्रमशः

– प्रो. अनन्त शर्मा , अध्यक्ष, साहिस्य–संस्कृति पीठ,
राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ।

मुख्य सेनापति, मुख्य राज्याधिकारी, मुख्य न्यायाधीश, प्रधान और राजा ये चार सब विद्याओं में पूर्ण विद्वान् होने चाहिए ।
– छठा समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

सम्पादकीय पृष्ठ 2 से आगे.....

बनाया था? गौरांगदेव (चैतन्य) ने बंग भूमि को वैष्णव संकीर्तन की मधुर मूर्छना से सम्मोहित तो किया किन्तु क्या भारत में भारतीयता स्थापित करने के लिए भी कोई उद्योग किया था? अन्ततः ! वे इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि राष्ट्र की एकता तथा गौरव की अभिवृद्धि का चिन्तन न तो किसी आचार्य ने किया और न किसी संप्रदाय प्रवर्त्तक ने । परन्तु महर्षि दयानन्द इसके अपवाद हैं जिन्होनें स्वदेश, स्वराज्य, स्वभाषा एवं स्वधर्म के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।''

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क जयपुर

निर्वाचन कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा के विधानानुसार 15 फरवरी, 2015 को आयोजित अंतरंग सभा की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार सभा का निर्वाचन कार्यक्रम अग्रांकित प्रकार है : –

क्र.सं.	कार्यक्रम विवरण	दिनांक	स्थान
1.	प्रस्तावित मतदाता सूची का प्रकाशन	01 जून, 2015	सभा कार्यालय, राजा पार्क, जयपुर
2.	प्रस्तावित मतदाता सूची पर आक्षेपों की प्राप्ति	01–07 जून, 2015 सायं 6 बजे तक	सभा कार्यालय, राजा पार्क, जयपुर
3.	प्रस्तावित मतदाता सूची पर प्राप्त आक्षेपों की सुनवाई एवं निस्तारण	15 जून, 2015 दोपहर 1 बजे तक	सभा कार्यालय, राजा पार्क, जयपुर
4.	अन्तिम मतदाता सूची का प्रकाशन	15 जून, 2015 सायं 5 बजे तक	सभा कार्यालय, राजा पार्क, जयपुर
5.	नाम–निर्देशन पत्रों की प्राप्ति	16 जून, 2015 प्रातः 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक	सभा कार्यालय, राजा पार्क, जयपुर
6.	नाम–निर्देशन पत्रों की जाच एवं वैध नाम निर्देशन पत्रों की सूची का प्रकाशन	17 जून, 2015 दोपहर 2 बजे तक	सभा कार्यालय, राजा पार्क, जयपुर
7.	नाम वापसी	17 जून, 2015 सायं 5 बजे तक	सभा कार्यालय, राजा पार्क, जयपुर
8.	चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की सूची का प्रकाशन एवं चुनाव चिन्ह् का आवंटन	18 जून, 2015	सभा कार्यालय, राजा पार्क, जयपुर
9.	मतदान	23 जून, 2015 प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक	
10.	मतगणना एवं परिणाम की घोषणा	23 जून, 2015	मतदान के पश्चात् (मतदान स्थल)

विशेष नोट –

1. नाम –निर्देशन पत्र सभा कार्यालय, राजापार्क, जयपुर से राशि रूपये 20/– प्रति फार्म भुगतान कर प्राप्त किये जा सकते हैं।
2. प्रत्येक नाम–निर्देशन पत्र के साथ रूपये 200/– की चुनाव धरोहर राशि की रसीद संलग्न करना आवश्यक है ।

जैसा राजा होता है, वैसी ही प्रजा होती है । इसलिए राजा और राजपुरूषों को अति उचित है कि कभी दुष्टाचार न करें, किन्तु सब दिन धर्म, न्याय से वर्तकर सबके सुधार का दृष्टान्त बनें ।

– छठा समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

विगत 1 वर्ष में आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा किये गये कार्यों का रिपोर्ट कार्ड

सभा की विगत 1 वर्ष की उपलब्धियाँ

प्रिय सदस्यगण !

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान, क्षेत्रान्तर्गत आने वाले सभी आर्य समाजों की विधिसम्मत विधानानुसार नियन्त्रक एवं नियामक संस्था है। अतः सभा लोकतान्त्रिक रूप से अपने सदस्यों के प्रति एक उत्तरदायी संस्था है। इसी उत्तरदायित्व बोध के प्रभाव से सभी सदस्यगणों के सूचनार्थ विगत 1 वर्ष से कार्य कर रही कार्यकारिणी का रिपोर्ट कार्ड प्रस्तुत किया जा रहा है।

अनेकविध बाधाओं से अत्यन्त प्रभावित होने एवं निरन्तर जूझते हुए भी सम्माननीय प्रधान श्री विजयसिंह जी भाटी, जोधपुर एवं मंत्री डॉ. सुधीर शर्मा के नेतृत्व में नवगठित टीम ने अनेक अभूतपूर्व कार्य निष्पादित किये हैं, जिनसे सभा के ढॉचागत स्वरूप एवं कार्यगत स्वरूप में अत्यन्त गति आयी है। उनमें से कुछ को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है : –

- सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक ये है कि लगभग 20 वर्षों से भी अधिक समय से खण्डहर बन चुके सभा कार्यालय परिसर का जीर्णोद्धार करवाकर उसे भव्यता एवं व्यवस्थित रूप प्रदान करना । जिसके सम्बन्ध में कुछ प्रबुद्ध आर्य जनों की प्रतिक्रियाएं आर्य मार्तण्ड के विगत अंकों में प्रकाशित भी की गई हैं।
- अब सभा कार्यालय परिसर में सभा भवन, कमरे, रसोई, कार्यालय, रिसेप्शन, शौचालय, बैठक कक्ष, आदि सुव्यवस्थित, स्वच्छ, एवं आधुनिक रूप से निर्मित हैं ।
- सभा कार्यालय परिसर में अतिथियों, संन्यासियों, आर्य जनों के आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था नियमित रूप से की जा रही है। परिणामस्वरूप अतिथियों को निरन्तर आवागमन में वृद्धि हुई है जो कि एक सुखद अनुभव है।
- आर्य मार्तण्ड मुखपत्र को और अधिक व्यापक एवं सुगम बनाकर साधारण आर्य जन तक पहुंच हो इसके लिए समस्त राजस्थान में दूरभाष, ई–मेल, व्यक्तिगत माध्यमों से निरन्तर सघन संम्पर्क किया जा रहा है। केवल इतना ही नहीं अनेक आर्य विद्वानों, संन्यासियों के साथ पाठकों को भी विभिन्न रूपों में सीधे तौर पर जोड़ने हेतु निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं , जिसमें बहुत हद तक सफलता मिल रही है।
- सभा के कार्यक्षेत्र में आने वाली अनेक आर्य समाज संस्थाओं के आपसी विवादों का सफलतापूर्वक निपटारा कर आर्य समाज के कार्यों को गति प्रदान करना ।
- सभा के मंत्री सहित कार्यालय के सहायकों का विभिन्न क्षेत्रों में जाकर वहाँ की समस्याओं का तुरन्त निदान करना।
- मंत्री द्वारा प्रान्त के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर जिला इकाईयों, स्थानीय आर्य समाजों की मीटिंग लेना, उनसे कार्यों की प्रगति की रिपोर्ट लेना एवं उनकी समस्याओं का यथास्थान समाधान करना ।
- अनेक संघर्षों एवं बाधाओं के पश्चात् भी सभा कार्यालय एवं कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा राजस्थान के अधिकांश भागों में सीधे सम्पर्क स्थापित करना ।
- अवैध एवं अवैदिक शादियों के अनेक मामलों में माननीय न्यायालयों के समक्ष मजबूती से सभा का पक्ष रखकर न्यायपालिका के समक्ष सभा का स्पष्ट रूख एवं स्वच्छ छवि स्थापित करने में सफलता हासिल करना ।
- ऋषि के मिशन को आगे बढ़ा सके, वेदों के प्रचार में, राष्ट्र– निर्माण के कार्य में गति आये इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा की नवीन टीम द्वारा आर्य एकता हेतु अनेक विध प्रयास करना । इसके लिए परोपकारिणी सभा, आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल सहित अनेक आर्य संगठनों, पं. लेखराम वैदिक मिशन, विभिन्न राज्यों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं आदि के साथ मिलकर कार्य करना ।
- सभा द्वारा कार्यालय परिसर में पिछले अनेक वर्षों में 15 फरवरी, 2015 को ''ऋषि जन्मोत्सव'' के रूप में किसी कार्यक्रम का आयोजित होना तथा विभिन्न कार्यक्रमों का समय–समय पर आयोजन होते रहना भी एक ऐतिहासिक कार्य है।
- सभा द्वारा किये जा रहे ऐसे अनेक कार्यक्रमों से समूचे राजस्थान में आर्य एकता एवं आर्य संगठन का एक सकारात्मक वातावरण तैयार हुआ है जो कि अपने आप में एक अभूतपूर्व घटना है और सुखद अनुभूति है।

आपका इसी प्रकार सहयोग, आशीर्वाद और मार्गदर्शन मिलता रहेगा, ऐसी हमें आशा है।

-सभा कार्यालय

राजा को चाहिए कि वह इस बात का नित्य ध्यान रखें कि बाल्यावस्था में एवं दोनों की प्रसन्नता के बिना विवाह न हो। ब्रह्मचर्य का यथायोग्य सेवन किया जाये । व्यभिचार और बहुविवाह का निषेध रहे । – छठा समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

नगर में पुनः शुरू होंगी आर्य समाज की गतिविधियॉ

बेगूं नगर स्थित आर्य समाज भवन के वर्षों से बन्द ताले खुले

बेगूं ! आर्य समाज के मंत्री श्यामसुन्दर जी गर्ग के निजी व्यावसायिक स्थान पर 25 अप्रैल को दोपहर में साधारण सभा का अधिवेशन आयोजित हुआ । लगभग 2 घण्टे चले इस अधिवेशन में आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के पर्यवेक्षक के रूप में श्री योर्गेन्द्र आर्य एवं आर्य वीर दल के प्रान्तीय कार्यकारी संचालक आचार्य देवेन्द्र शास्त्री ने बैठक को सम्बोधित किया ।

समाज के मंत्री श्यामसुन्दर गर्ग ने बताया कि साधारण सभा में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर नगर में आर्य समाज की गतिविधियों को पुनः संचालित करने एवं प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। इसके साथ ही अन्य वैदिक संस्कृति के अनुसार अनेकविध गतिविधियों के भी पुनः संचालन पर सामूहिक सहमति बनी । इसके लिए उपस्थित प्रतिनिधियों द्वारा बेगूं बस स्टेण्ड पर स्थित पुराने आर्य समाज भवन को स्थान के रूप में चुना गया जिस पर विगत लगभग 20 वर्षों से ताले लगे हुए थे। सभा में अन्य उपस्थित प्रतिनिधियों ने भी अपने–अपने विचार रखे।

अधिवेशन के पश्चात् आचार्य देवेन्द्र जी एवं योगेन्द्र जी के नेतृत्व में आर्य सभासदों द्वारा उक्त आर्य समाज भवन का कब्जा वापस लेकर उसके ताले खोले गये । इस कार्य से नगर के समस्त आर्यजनों में अत्यन्त उत्साह है । सभी आर्यजनों ने सभा के प्रतिनिधियों को इस कार्य के लिए धन्यवाद ज्ञापित कर सम्मानपूर्वक विदा किया ।

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा मनाया गया दो दिवसीय वार्षिकोत्सव

हरिद्वार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा अपना दो दिवसीय वार्षिकोत्सव मनाया गया । जिसमें दो दिवसीय यज्ञ के साथ अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किये गए । वार्षिकोत्सव में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक से आए प्रो0 सुरेन्द्र कुमार ने मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कर्म और भोग विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कर्म के फलों को समझाते हुए सत्कर्म करने की प्रेरणा दी । आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महासचिव विनय आर्य ने गुरूकुल के विद्यार्थियों को सन्मार्ग की ओर बढ़ते हुए तन्मयता के साथ विद्या ग्रहण करने की शिक्षा दी । अन्य भी अनेक विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर अपने – अपने विचार प्रस्तुत किए । विद्यार्थियों ने ईशभक्ति से ओत–प्रोत भजनों ,गीतों की भी मनमोहक प्रस्तुतियॉ दी ।

अन्त में कुलसचिव प्रो0 विनोद कुमार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्य समाज बूंदी की कार्यकारिणी के चुनाव सम्पन्न

12 अप्रैल, 2015 को आर्य समाज की कार्यकारिणी के चुनाव सम्पन्न हुए । चुनाव अधिकारी श्री श्रवणलाल जी धाभाई, संस्थापक सदस्य एवं संरक्षक, आर्य समाज बूंदी ने बताया कि चुनाव बिना किसी बाधा के सकुशल सम्पन्न हुए जिसमें श्री मार्तण्ड प्रकाश द्विवेदी को प्रधान, श्री अभयदेव शर्मा, श्री कुलदीप वधवा को उपप्रधान; श्रीराम आर्य, श्री पुरूषोत्तम महावर, श्री अशोक कुमार शर्मा, श्री सत्यनारायण, श्री मोतीलाल राठौर, श्री अभिषेक वधवा आदि को क्रमशः मंत्री, उपमंत्री, कोषाध्यक्ष, उप कोषाध्यक्ष, पुस्तकालय प्रभारी, प्रवक्ता आदि पदों पर चुना गया । इसके अतिरिक्त श्री अनुराग शर्मा को विधि सलाहकार एवं श्री जगदीश चन्द्र एवं श्री कौशल त्रिवेदी को सदस्य के रूप में चुना गया ।

आर्य समाज, सांभर लेक के चुनाव सम्पन्न

12 अप्रैल, 2015 को स्थानीय आर्य समाज प्रांगण में आर्य समाज नवीन कार्यकारिणी के चुनाव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए । चुनाव अधिकारी श्री अशोक जी के अनुसार कुल 21 सदस्यीय कार्यकारिणी को सर्वसम्मति से चुना गया । जिसमें गिरधर गोपाल जी अग्रवाल को प्रधान, नीतेश जी गोयल को उपप्रधान एवं अतुल अग्रवाल को मंत्री चुना गया ।

जिस राजा के राज्य में न चोर, न परस्त्रीगामी, न दुष्ट वचन का बोलनेहारा, न साहसिक डाकू और न दण्डघ्न अर्थात् राजा की आज्ञा भंग करने वाला नहीं है, वह राजा अतीव श्रेष्ठ है।

– छठा समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

आर्य वीर दल, राजस्थान का प्रान्तीय योग –व्यायाम प्रशिक्षण शिविर 17–24 मई तक ऋषि उद्यान, अजमेर में

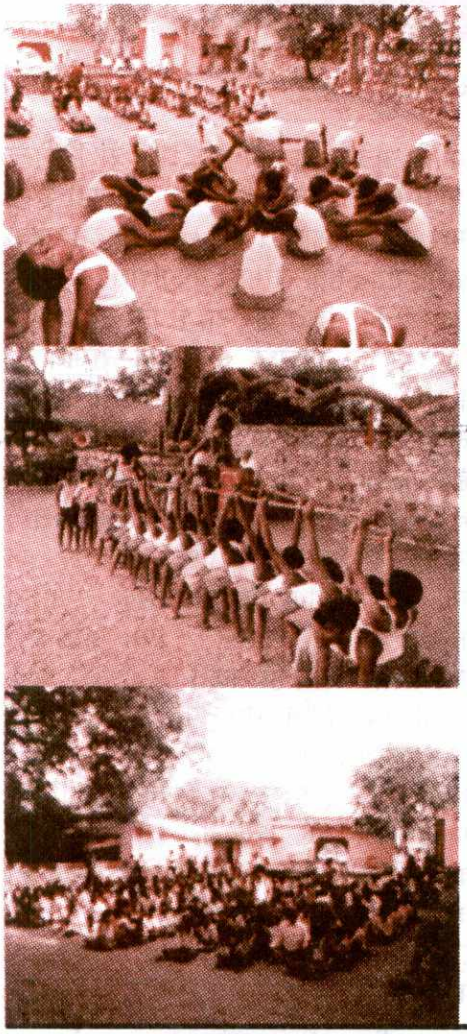

सार्वदेशिक आर्य वीर दल की राजस्थान प्रान्तीय इकाई एवं महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी सभा परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्वावधान में प्रान्तस्तरीय आवासीय योग –व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर **17 – 24 मई, 2015 को ऋषि उद्यान, अजमेर में** आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में समूचे प्रान्त से चयनित सैंकड़ों बालक, किशोर, युवा आदि भाग लेंगे ,जिन्हें 7 दिनों तक पूर्णरूपेण गुरूकुलीय दिनचर्या में रखकर योग, ध्यान, व्यायाम, यज्ञ, स्वास्थ्य, व्यवहार, संस्कृति, अस्त्र–शस्त्र, मार्शल आर्ट, तकनीकी, विज्ञान, वेद, अध्यात्म, मलखम्भ, जिम्नास्टिक, संगीत आदि अनेक प्रकार की विधाओं का सुयोग्य शिक्षकों द्वारा सघन प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा शिविर की समाप्ति पर सभी सफल प्रशिक्षुओं को प्रमाण–पत्र भी प्रदान किये जाएंगे जो कि उनके लिए भविष्य में अनेकत्र उपयोगी सिद्ध होते हैं।

प्रान्तीय मंत्री भवदेव शास्त्री ने बताया कि शिविर में विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के दुर्व्यसनों, नशा आदि से मुक्त करने अथवा मुक्त बनाये रखने के लिए विशेष कार्यशालाऐं, व्यक्तिगत परिचर्चा, मनोवैज्ञानिक तरीकों आदि के माध्यम से विज्ञान और अध्यात्म का समुचित प्रयोग किया जायेगा, जिससे कि एक नशामुक्त राष्ट्र का संकल्प पूर्ण किया जा सके।

दिनांक 17 मई को सायं 5 बजे शिविर स्थल पर ध्वजारोहण के साथ शिविर के उद्घाटन समारोह का आयोजन होगा तथा 24 मई रविवार को शिविर स्थल पर ही भव्य समापन समारोह का आयोजन किया जायेगा ।

शिविर में न्यूनतम 14 वर्ष की आयु एवं स्वस्थ शरीर वाले ही भाग ले सकते हैं ।

अतः जो भी आर्य जन अपने बच्चों को इस शिविर में प्रशिक्षण हेतु, चरित्र–निर्माण हेतु भेजने के इच्छुक हों ,अथवा इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त हेतु संगठन के अपने – अपने जिले के प्रतिनिधियों से सम्पर्क कर सकते हैं अथवा **देवेन्द्र जी शास्त्री 9352547258, भवदेव जी शास्त्री 9001434484, भागचन्द आर्य 9828147069, पंकज आर्य 9414424759** आदि से सम्पर्क कर सकते हैं ।

आर्य वीर दल, राजस्थान प्रान्त के कार्यकारी संचालक देवेन्द्र जी शास्त्री ने किया गंगापुर दौरा
पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं, आर्य वीरों से की चर्चा

गंगापुर सिटी! संगठन के कार्यकारी प्रान्तीय संचालक श्री देवेन्द्र जी शास्त्री ने 28 अप्रैल को गंगापुर सिटी आर्य वीर दल क्षेत्र का एक दिवसीय प्रवास किया। आर्य वीर दल एवं आर्य समाज की दृष्टि से यह एक अतिमहत्वपूर्ण क्षेत्र है। अपने इस अतिव्यस्त प्रवास में संचालक महोदय ने आर्य सभासदों, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं आर्य वीरों से विभिन्न विषयों पर चर्चा की। प्रातः 8 बजे आर्य समाज में होने वाले दैनिक यज्ञ में सम्मिलित हुए एवं यज्ञीय उद्बोधन के साथ महिलाओं को आर्य वीरांगना दल, से जुड़ने एवं अपने बच्चों को भी आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल से जुड़ने हेतु प्रेरित किया । पश्चात् 10 बजे से आर्य सभासदों एवं पदाधिकारियों के साथ संक्षिप्त बैठक में आर्य समाज के विस्तार एवं आर्य वीर दल की भूमिका तथा नवीन स्वरूप पर चर्चा की गई । उसके पश्चात् 12 बजे से 3 बजे तक आर्य वीर दल की नगर इकाई के प्रमुख पदाधिकारियों, अधिष्ठाता के साथ संगठन की स्थितियों, स्वरूप, समस्याओं पर गहन चर्चा की । दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक संगठन के संरक्षक एवं वरिष्ठ प्रचारक श्री मदनमोहन आर्य से संगठन की समस्याओं, वर्तमान स्वरूप, भविष्य की स्थितियॉं, आर्य संगठनों से समन्वय आदि पर विचार–विमर्श किया। सायं 5–6 बजे तक नगर कार्यकारिणी के साथ सामूहिक बैठक एवं सायं 6–7.30 बजे तक शाखाओं का निरीक्षण एवं आर्य वीरों को सम्बोधित किया । पश्चात् भगवती नगर स्थित आर्य समाज के नवनिर्मित भवन का अवलोकन किया और उसकी भव्यता देखकर अभिभूत हुए। अन्त में नगर के ही एक वरिष्ठ आर्य वीर के विवाह समारोह में भाग लेकर रात्रि में रेलमार्ग से भीलवाड़ा की ओर प्रस्थान किया ।

क्योंकि शरीर बल की वृद्धि के बिना यदि केवल आत्मा का बल अर्थात् विद्या ज्ञान ही बढ़ाये जाये तो एक बली सैंकड़ों विद्वानों को जीत सकता है और यदि केवल शरीर बल ही बढ़ाये जायें तो भी बिना विद्या के उत्तम व्यवस्था कभी नहीं हो सकती । परिणामस्वरूप परस्पर फूट, झगड़ा आदि करके नष्ट–भ्रष्ट हो जायें । इसलिए शरीर और आत्मा का बल निरन्तर बढाते रहना चाहिए । – छठा समुल्लास, सत्यार्थ प्रकाश

thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

अत्यावश्यक सूचना :

- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का निर्वाचन आगामी जून माह में प्रस्तावित है । इसके लिए सभा से सम्बद्ध कुछ आर्य समाज भी अपना वार्षिक मानचित्र निर्धारित समय सीमा 30 अप्रैल तक भी किसी कारणवश नहीं भेज पायें हैं । अतः उन सभी आर्य समाजों के मंत्री तथा प्रधानों को सूचित किया जाता है कि वे समस्त आर्य समाजें अपना दो या एक वर्ष का दशांश, निश्चित कोटि तथा आर्य मार्तण्ड शुल्क **20 मई, 2015** तक सभा को निर्धारित प्रपत्र में भरकर आवश्यक रूप से प्रेषित कर देवें। प्रतिवेदन प्रपत्र हेतु एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु सभा कार्यालय 0141–2621879 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

सामान्य सूचना :

- सभी आर्य समाजों, जिला आर्य प्रतिनिधि इकाईयों, आर्य महानुभावों से निवेदन है कि "आर्य मार्तण्ड" में समस्त राजस्थान का प्रतिनिधित्व हो सके, इसके लिए पत्र द्वारा स्वतन्त्र पत्रकारिता में रूचि रखने वाले आर्य महानुभावों को पत्र से जुड़ने का एक सुनहरा अवसर प्रदान किया जा रहा है। जो कोई भी अपने क्षेत्र में रहकर आर्य मार्तण्ड के लिए पत्रकारिता कर सेवा करने के इच्छुक हों, वे अपनी सम्पूर्ण जानकारी, फोटो के साथ aryamaratnad@gmail.com पर मेल कर सकते हैं।
- सभी सदस्यगणों, आर्य महानुभावों से निवेदन है कि अपने–अपने क्षेत्रों में होने वाली गतिविधियों, आयोजनों, कार्यक्रमों आदि की सूचना आर्य मार्तण्ड में प्रकाशन हेतु भिजवाने का कष्ट करें। साथ ही आपकी कोई भी मौलिक रचना, सुझाव, विचार, लेख आदि हमें भेज सकते हैं। आपका सहयोग और हमारा प्रयास मिलकर आर्य राष्ट्र के निर्माण में सार्थक कार्य बनेगा ।

प्रतिक्रिया

सभी पाठकों को सादर नमस्ते !

हमें पिछले कुछ समय से अनेक पाठकों की ओर से विभिन्न विषयों से सम्बन्धित प्रश्न, शंकाऐं निरन्तर प्राप्त हो रही हैं । आपका यह उत्साह हमारे लिए प्रेरणादायक है। आपके इन प्रश्नों को समाधान के साथ सभी पाठकों के लाभार्थ प्रकाशित करने एवं जैसा कि हम विगत अंकों में प्रकाशित कर रहे हैं कि नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में **"शंका–समाधान"** नाम से कॉलम आरम्भ करने का प्रस्ताव है । अतः आर्य मार्तण्ड द्वारा मई –द्वितीय अंक से **"प्रतिक्रिया"** शीर्षक का स्वरूप परिवर्तित किया जा रहा है। उक्त अंक से यह **"शंका–समाधान"** के नाम से प्रकाशित किया जायेगा । जिसमें आप सभी (पाठकों)की ओर से हमें प्राप्त हो रहे विभिन्न प्रश्नों, शंकाओं का हमारे विद्वानों के पैनल द्वारा सटीक एवं प्रामाणिक समाधान करवाने का प्रयास करते हुए उसे प्रकाशित किया जायेगा , जिससे कि सभी पाठकगण लाभान्वित हो सकें।

यदि आप की भी वेद, दर्शन, उपनिषद्, भारत, महर्षि दयानन्द, ईश्वर, अध्यात्म, शिक्षा–व्यवस्था, योग, आयुर्वेद आदि किसी भी विषय से सम्बन्धित कोई प्रश्न, कोई शंका हो तो हमें भेज सकते हैं । अपने भेजे हुए ई–मेल, पत्र आदि पर "शंका–समाधान" अवश्य लिखें। समय, परिस्थिति, अनुकूलता के अनुसार प्रकाशित करने का प्रयास किया जायेगा ।

आपकी जानकारी हेतु "आर्य मार्तण्ड" के पैनल से जुड़े हुए विद्वानों के नाम एक बार पुनः प्रकाशित किये जा रहे हैं।

1. डॉ. भवानी लाल भारतीय , श्रीगंगानगर
2. डॉ. रामपाल विद्याभास्कर , जयपुर
3. श्री मदनमोहन जी आर्य , गंगापुर सिटी
4. पं. वासुदेव जी शास्त्री , जयपुर
5. आचार्य रामनारायण जी शास्त्री, जोधपुर
6. आचार्य उषर्बुध जी, जयपुर ।

आगामी कार्यक्रम

- आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा 10 मई, 2015 को प्रातः 8.30 बजे से 101 कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन ।
- 17 से 24 मई, 2015 तक ऋषि उद्यान, अजमेर में परोपकारिणी सभा एवं आर्य वीर दल राजस्थान प्रान्त द्वारा संयुक्त रूप से "प्रान्तीय योग–व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर" का आयोजन ।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित। मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर शर्मा, मंत्री–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक:–
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।